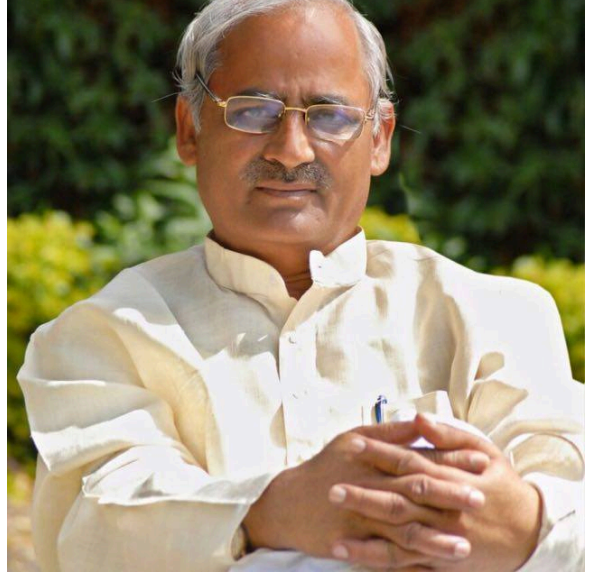


६ अक्टूबर २०१६ को दिवंगत

‘वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को समर्पित एक प्रेरणादायक वरणीय जीवन: डा. धर्मवीर’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

ऋषि भक्त डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज के बहुमुखी प्रतिभा के धनी शीर्षस्थ विद्वान थे। आप आर्यसमाज के प्रगल्भ वक्ता, प्रतिष्ठित लेखक, सम्पादक, पत्रकार, वेद-पारायण यज्ञों का ब्रह्मत्व करने वाले यज्ञ मर्मज्ञ, धर्मोपदेशक, आर्यसमाज के प्रचारक, प्रभावशाली उपदेशक सहित भव्य व्यक्तित्व के धनी भी थे। परोपकारिणी सभा से आप अनेक दशकों से जुड़े हुए थे और वर्तमान में इस प्रतिष्ठित सभा के प्रधान पद को सुशोभित एवं गौरवान्वित कर रहे थे। व्यवसाय की दृष्टि से आप दयानन्द कालेज, अजमेर के शिक्षक सहित अनेक दायित्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे। माह सितम्बर-अक्तूबर, 2016 के लगभग दस-बारह दिनों के अल्पकालिक रोग के बाद अचानक 6 अक्टूबर, 2016 को आपकी मृत्यु हो गई। इस समाचार से सारा आर्य जगत स्तब्ध है। परोपकारिणी सभा, अजमेर से जुड़कर अपने कार्यकाल में आप इसे उन्नति के शिखर पर ले गये। सभा के ऋषि उद्यान में एक गुरुकुल व गोशाला की स्थापना व संचालन सहित आचार्य सत्यजित् आर्य, आचार्य सोमदेव जी, विश्वङ्ग जी और आचार्य कर्मवीर जी जैसे उच्च कोटि के ऋषिभक्त विद्वानों को अध्ययन व अध्यापन आदि की अपनी गतिविधियां संचालित करने का आपने सुअवसर प्रदान किया। आपके चले जाने से आर्यसमाज में जो रिक्तता आई है उसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं दीखता। यह आर्यसमाज एवं डा. धर्मवीर जी के परिवार की एक ऐसी क्षति है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज का शायद यह इतिहास ही रहा है कि ऋषि दयानन्द सहित इसके प्रमुख विद्वान पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल आदि अचानक ही मृत्यु का ग्रास बने।



डा. धर्मवीर जी का जन्म 20 अगस्त सन् 1946 को पं. भीमसेन आर्य के घर उद्वीर महाराष्ट्र में हुआ था। आपके पिता दृढ़ आर्यसमाजी, कवि एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे। धर्मवीर जी को 10 वर्ष की आयु में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट कराया गया। व्याकरणाचार्य की उपाधि ग्रहण करने के बाद आप आगे अध्ययन के लिए गुरुकुल कांगड़ी चले आये। यहां आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन करके बीए.एम.एस. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद संस्कृत व्याकरण और साहित्य में अधिक रुचि होने के कारण एम.ए. संस्कृत में प्रवेश लिया। आपने यह परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। डा. धर्मवीर जी हंसमुख, विनोदी, सरल और निश्छल स्वभाव के व्यक्ति थे। सन् 1974 में आप दयानन्द कालेज, अजमेर में संस्कृत के प्राध्यापक नियुक्त हुए। कुछ वर्ष बाद अध्यापन के साथ-साथ आपने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में दयानन्द शोधपीठ से डा. भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1975 में दयानन्द संस्थान के संस्थापक और संचालक पंडित भारतेन्द्र नाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु जी) की ज्येष्ठ पुत्री ज्योत्सना जी के साथ आपका विवाह हुआ। नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्री कैलाश सत्यार्थी जी आपके रिश्ते में साढ़ू हैं। सन्तान के रूप में आपको सुयश, सुवर्या और निमिषा नाम की तीन संस्कारवती पुत्रियां प्राप्त हुईं। डा. धर्मवीर जी का एक संकल्प था। वे बचपन से ही अपनी तीनों पुत्रियों से केवल संस्कृत में बात करते थे। इस संकल्प का

उन्होंने आजीवन निर्वाह किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा के साथ वह आज से चालीस वर्ष पहले जुड़े थे। आपने इस प्रतिष्ठित सभा के सदस्य, उपमंत्री, संयुक्त मंत्री, मंत्री, कार्यकारी प्रधान और प्रधान रहकर अपनी बहुमूल्य सेवायें प्रदान कीं। सत्यनिष्ठा, परिश्रम, लग्नशीलता, कर्मठता, निस्वार्थ भाव, निष्कामता, धैर्य और समर्पण के भाव आपके जीवन के आधार स्तम्भ व मूल मंत्र थे जिन्होंने आपके जीवन व व्यक्तित्व को समूचे आर्यजगत का प्रिय बनाया।

परोपकारिणी सभा के मंत्री के रूप में आपने जब कार्यभार संभाला था तब ऋषि उद्यान में भवन के नाम पर केवल एक सरस्वती भवन था। उसके बाद आपने उद्यान परिसर में कई मंजिलों वाले अनेक भव्य भवनों का निर्माण कराया। ऋषि उद्यान में गुरुकुल एवं गोशाला का श्रीगणेश किया। विरक्त साधु-संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को निःशुल्क रहने की सुविधा प्रदान की। यहां ऐसे अनेक विद्वान आचार्य रहते हैं, जो वेद और आर्यसमाज के प्रचार कार्य को देश और विदेश में लगातार गति प्रदान कर रहे हैं। आपने प्रकाशन के काम में विशेष गति प्रदान की। परोपकारिणी सभा के माध्यम से महर्षि दयानन्द के ऋग्वेदभाष्य और यजुर्वेद भाष्य सहित अन्य सभी ग्रन्थों, इतर वेदभाष्य एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों का प्रकाशन भी पर्याप्त संख्या में कराया है। आस्था टीवी चैनल के माध्यम से भी डा. धर्मवीर जी के सैद्धांतिक, शास्त्रीय और धार्मिक प्रवचनों का प्रसारण लम्बे समय तक होता रहा है। आप परोपकारी पत्रिका के तीस वर्षों से भी अधिक समय से अवैतनिक सम्पादक रहे। जब आपने इसका कार्यभार सम्भाला था तो इसकी प्रसार संख्या 400 से 500 के बीच थी और अब लगभग पन्द्रह हजार की संख्या में इसे पाक्षिक रूप से प्रकाशित किया जा जाता है। इन उन्नतियों का मुख्य श्रेय आपके संकल्पों, निर्णयों व कार्यों को ही है। डा. धर्मवीर जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। आपकी वाणी मधुर, मोहक, शुद्ध, स्पष्ट और ओजस्वी थी। आपका परिधान सादा, सुन्दर और उज्ज्वल होता था। आप श्वेत धोती कुर्ता पहनने का संकल्प लिए हुए थे। प्रखर वक्ता थे। आप निर्भीक और ओजस्वी लेखक और पत्रकार थे। आपका जीवन महर्षि दयानन्द, वेद और आर्य समाज के लिए समर्पित था। स्वार्थ आपको दूर तक नहीं गया था और परार्थ अपका लक्ष्य था। मानवता के आप सच्चे उपासक थे।

धर्मवीर जी ने आर्यसमाज की विचारधारा का अपने निजी जीवन में भी पूरा पूरा पालन किया। आपने अपनी तीनों पुत्रियों के विवाह जाति बन्धन तोड़कर किये। इस पर टिप्पणी करते हुए आर्य विद्वान् प्रा. जिज्ञासु जी कहते हैं कि अपनी सन्तानों के विवाह जाति बन्धन तोड़कर करने की बात करना सरल परन्तु विवाह करना कठिन है। डा. धर्मवीर जी जातिवाद, प्रान्तवाद की सोच से बहुत ऊपर थे। निडरता व ऋषि दयानन्द जी के व्यक्तित्व के प्रायः सभी गुण आपको बपौती से प्राप्त हुए थे। आपके पिता श्री पं. भीमसेन जी की सत्यवादिता व धर्मनिष्ठा को मराठवाड़ा के सब आर्य जानते व मानते थे।

आज डा. धर्मवीर जी हमारे मध्य में नहीं हैं। वह इस मर्त्यलोक से जा चुके हैं तथापि उनके कार्य और लिखित साहित्य तथा आडियो व वीडियो सुरक्षित व उपलब्ध हैं जो वर्तमान व भविष्य में आर्यों का मार्गदर्शन कर सकते हैं व करेंगे। हमें आशा है कि निकट भविष्य में उनके जीवन व कार्यों पर कुछ पठनीय पुस्तकों का प्रकाशन होगा। कई आर्य पत्रिकायें उन पर विशेषांक भी प्रकाशित कर रही हैं। हमें यदा-कदा इस समस्त सामग्री का अवलोकन व अध्ययन करते रहना चाहिये। हमें लगता है कि वर्तमान में जो लोग उनके सम्पर्क में आये हैं, वह तो उन्हें याद रखेंगे ही।

मृत्यु के पूर्व वह किसी से संवाद नहीं कर सके। डाक्टरों को हाथ से संकेत करते हुए उन्हें धैर्य रखने की प्रेरणा करते रहे। डा. धर्मवीर जी ने जो शास्त्रीय वचन आदि पठाग्र कर रखे थे, उसका वह चलते-फिरते व यात्रा आदि करते हुए पारायण करते रहते थे। मृत्यु से पूर्व देह-त्याग के समय तक वह कुछ बड़बड़ाते रहे। रेलयात्रा के बाद अस्पताल जाते समय कह रहे थे 'ले चलो हमें दयानन्द के स्थान पर'। स्टेशन से ऋषि उद्यान लाते समय भी सेवकों को यही कहते थे 'मुझे ऋषि उद्यान नहीं, श्मशान ले चलो।' मृत्यु के बाद उनका दाह कर्म उसी स्थान पर किया गया जहां महर्षि दयानन्द जी का किया गया था।

डा. धर्मवीर जी पुरुषार्थ व परमार्थ के पुतले थे। उनका जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहा। यदि वह अपनी आत्म कथा लिख जाते तो अच्छा होता। हमें उसे पढ़कर उनसे सम्बन्धित बहुत से तथ्यों को जानने का अवसर मिलता। यदि सम्भव हो तो उनके जीवन के सभी प्रसंगों का संग्रह कर उसका प्रकाशन किया जाना चाहिये जैसा कि पं. लेखराम रचित ऋषि के जीवन में किया गया है। आर्य समाज के पूजनीय विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु उनके निकट रहे हैं। वह यदि डा. धर्मवीर जी विषयक अपने सभी संस्मरण लेखबद्ध कर दें तो यह उत्तम कार्य होगा।

डा. धर्मवीर जी ने परोपकारिणी सभा को एक नई पहचान दी। ऋषि उद्यान में नये भवन बने, विद्वानों का सत्कार होने लगा। गोशाला के संचालन के साथ सभा में आचार्य सत्यजित् आर्य जी का निवास व गुरुकुल का संचालन भी सभा की महनीय गतिविधियां रही हैं। परोपकारी मासिक पत्र का तो मासिक से पाक्षिक होना और कुछ सौ की प्रकाशन संख्या से सहस्रों की संख्या का स्तर प्राप्त करना आपके कुशल दिशा-निर्देशन का ही परिणाम कहा जा सकता है। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य सहित विगत कुछ वर्षों में पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय कृत अथर्ववेदभाष्य एवं ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापनों का प्रकाशन भी परोपकारिणी सभा के स्तुत्य कार्य हैं जिनका मुख्य श्रेय आपको ही है। परोपकारी पाक्षिक में आपका लगभग तीन पृष्ठों का सम्पादकीय प्रत्येक अंक में प्रकाशित होता था। विषय की जो स्पष्टता और अभिव्यक्ति आपके सम्पादकीय में होती थी वह हमें अन्य किसी पत्रिका के सम्पादकीय में पढ़ने को नहीं मिलती थी। कुछ वर्ष पूर्व पं. क्षितीज वेदालंकार के आर्यजगत में सम्पादकीय भी अति रुचिकर होते थे। इसका यह प्रभाव था कि जब भी परोपकारी पत्रिका आती थी तो हम उसमें सम्पादकीय और जिज्ञासु जी का 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' लेखों को प्रथम पढ़ते थे। अक्टूबर, 2016 के द्वितीय अंक में भी 'यज्ञ की वेदी पर



पाखण्ड के पॉव' शीर्षक सम्पादकीय पढ़ने को मिला। अब आगे से यह श्रृंखला टूट गई है जिसका हमें दुःख है। यदि परोपकारी में प्रकाशित आपके सभी लेखों का एक संग्रह प्रकाशित कर दिया जाये तो यह उत्तम कार्य होगा। एक ओर जहां इन सभी लेखों की रक्षा होगी वहीं हमारे शोध छात्रों को भी कुछ विशष पढ़ने व सीखने को मिलेगा। हमारे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक भी इससे शिक्षा लेकर अपने सम्पादकियों में सुधार कर सकते हैं। 40-45 वर्ष पूर्व आर्यसमाजी बनने के बाद से परोपकारी पत्रिका हमारी प्रिय पत्रिका रही है। हमने तभी से इसे व अन्य कुछ पत्रिकाओं को वर्ष भर के अंकों को बाइण्ड कराकर रखना आरम्भ कर दिया था। बीच में एक बार यह श्रृंखला टूट गई थी परन्तु इसके बाद हमने इसे पुनः आरम्भ कर दिया था। आज हमारे पास परोपकारी पत्रिका साहित्य भी एक बहुत बड़ी पूंजी के रूप में विद्यमान है जिसे कुछ समय बाद हमें भी किसी योग्य पुस्तकालय को सौंपना है जहां इसकी रक्षा होने के साथ अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सकें।

डा. धर्मवीर जी तीन पुत्रियों के पिता एवं विद्वान गृहस्थी थे। हर गृहस्थी की इच्छा होती है कि उसका अपना घर हो परन्तु वह इस इच्छा में फंसे नहीं। उन्होंने अपना कोई घर नहीं बनाया। आप आर्यसमाजों के उत्सवों व आयोजनों में उपदेशों व प्रचार के लिए जाते थे परन्तु आपने कुछ अन्य प्रचारकों की तरह कभी अपनी दक्षिणा और यात्रा भत्ता न तय किये और न किसी प्रकार की कहीं किसी से मांग की। इस विषय में प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी कहते हैं कि 'धर्मवीर जी ने घर नहीं बनाया। अपने लिए कभी कुछ नहीं मांगा। न दक्षिणा मांगते हुए उन्हें देखा गया और न ही मार्ग व्यय की कहीं मांग की। घर घाट बनाने, धन कमाने की कतई चिन्ता नहीं की। जो कुछ कहीं से मिला, चुपचाप सभा को भेंट करते रहे।' एक स्थान पर जिज्ञासु जी ने बताया है कि 'वह ईश्वर से कोई ऐसा वरदान लेकर आये थे कि वह

निरन्तर नया-नया इतिहास रचते रहे। जहां भी हाथ लगाया, एक सृष्टि रच दी। धर्मवीर जी किसी व्यक्ति की चाकरी नहीं करना चाहते थे, वह ध्ययेनिष्ठ थे। इतिहास में ऐसे दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति ही स्थान पाते हैं।' 5 अक्तूबर को मृत्यु से पूर्व की रात्रि उनका स्वास्थ्य अत्यन्त चिन्ताजनक था। गुरुकुल का ब्रह्मचारी योगेन्द्र आर्य रात्रि को उनकी सेवा व देखभाल कर रहा था। देर रात्रि में उन्होंने उस ब्रह्मचारी को कहा, 'आप मेरी चिन्ता न करें। आप सो जायें। आप विश्राम करें।' ऐसे संस्कार व ऐसा व्यवहार कुछ विरले महापुरुषों में ही देखने को मिलता है।

आचार्य धर्मवीर जी का स्वभाव निराला था। आपके प्रवचन सुनने वाले श्रोताओं की संख्या दो-तीन, सहस्र व सहस्राधिक हो, आपको इसकी कोई चिन्ता नहीं होती थी। आप प्रति वर्ष कुछ समय के लिए बिना कहीं से किसी के आमंत्रण मिले ही दूरस्थ प्रदेशों, ग्रामों व नगरों में जहां आर्यसमाज या तो हैं नहीं और यदि हैं तो शिथिल हो चुकी अथवा मृत प्रायः हैं, जहां कोई विद्वान प्रचारार्थ जाना नहीं चाहता, वहां पहुंच जाते थे। अपनी धर्मपत्नी जी को भी आप साथ ले जाते थे। ओम् मुनि जी और प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी भी इन यात्राओं में आपके साथी रहते थे। इस वर्ष के पूर्वार्ध में जब आप गये तो उसका समाचार परोपकारी पत्र में पाठकों को पढ़ने को मिला था जिसमें बहुत उपयोगी जानकारियां थी। 2017 की प्रचार यात्रा के विषय में भी आपने राजेन्द्र जिज्ञासु जी से चलभाष पर अजमेर में बैठ कर योजना बनाने को कहा था। यात्रा में किस-किसको साथ ले जाना था, यह अभी तय होना था परन्तु इससे पूर्व ही आप अपनी अन्तिम यात्रा पर अकेले ही निकल गये।

डा. धर्मवीर जी 20 सितम्बर, 2016 को जबलपुर आर्यसमाज के 5 दिवसीय उत्सव के लिए अजमेर से निकले थे। आपकी धर्मपत्नी ज्योत्सना जी को भी साथ जाना था परन्तु किसी कारण वह न जा सकीं। जबलपुर में उन्होंने पांच दिन का उत्सव पूरा किया और 25 सितम्बर को दिल्ली के निकट पिलखुआ आर्यसमाज के 7 दिवसीय उत्सव में पहुंच गये। यहां आपका स्वास्थ्य में बिगाड़ हुआ जिसकी गम्भीरता को न जानकर आप अस्वस्थ होते हुए तथा कष्ट झेलते हुये भी निरन्तर व्याख्यान देते रहे। उत्सव के अन्तिम दिन तो व्याख्यान भी न दे सके परन्तु अपनी सेवा के लिए किसी को कष्ट नहीं दिया। परिवार के सदस्यों ने रेल से अजमेर न जाकर गाड़ी भेजकर उसमें आने के लिए कहा परन्तु आप रेल से ही अजमेर के लिए चल दिये। अजमेर पहुंचने तक आपकी स्थिति अत्यन्त असहाय की सी हो गई थी। आप रेल से बाहर भी न आ सके। ऐसी स्थिति में रेलवे स्टेशन से आचार्य सत्यजित् जी अपने कुछ ब्रह्मचारियों के साथ आपको ऋषि उद्यान ले गये और स्वास्थ्य की गम्भीरता को देखते हुए वहां से तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। वहां उपचार आरम्भ हुआ। आवश्यक दवायें दी गईं तथा जांच व परीक्षण आदि किये गये। सायं को ऋषि उद्यान आ गये। भोजन में उन्होंने कुछ दूध लिया और बोले 'वैसे तो मैं ठीक हूं परन्तु शरीर साथ नहीं दे रहा है।' प्रातः स्वास्थ्य फिर बिगड़ने पर डाक्टर को फोन कर धर्मवीर जी को अस्पताल ले गये। आई.सी.यू. में रखकर डायलेसिस किया गया। कारण यह था कि किडनी में संक्रमण हो गया था। कुछ सुधार दिखाई दिया परन्तु 6 अक्तूबर को प्रातः पांच बजे स्थिति बिगड़ गई और कुछ देर बाद आप संसार को छोड़कर विदा हो गये। डाक्टर ने अपनी ओर से सभी प्रयत्न किये परन्तु वह सभी व्यर्थ रहे।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि डा. धर्मवीर जी विद्यार्थी जीवन में अपने गुरु स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के प्रिय शिष्य रहे। वह बाहर भी जाते तो धर्मवीर जी का नाम उनके मुख से अनायास निकल जाता था। इसे स्मरण कर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने लिखा है कि स्वामी ओमानन्द जी की डा. धर्मवीर जी के प्रति आत्मीयता का ही परिणाम था कि परोपकारी सभा का प्रधान बनने के समय आपने योग्य शिष्य डा. धर्मवीर जी को परोपकारी सभा में सदस्य बनाकर उसका उत्तरदायित्व दिया और अजमेर में ही (दयानन्द कालेज, अजमेर में) नियुक्ति कराकर स्वयं निश्चिन्त हो गए। पूज्यपाद गुरु ओमानन्द जी अपनी सूझ बूझ वा दूरदर्शिता से अपनी दीर्घकालीन योजना को सफल कर गए। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने भोजन विषयक एक अन्य संस्मरण में डा. धर्मवीर जी की बोलचाल में बेबाकी के गुण को भी प्रस्तुत किया है। स्वामी जी और डा. धर्मवीर जी एक बार बहराईच जिले के ममलार्जुनपुर आर्यसमाज के

शताब्दी समारोह में मिले। भोजन के समय धर्मवीर जी को पूरी व आलू-बैंगन खाते देखकर धर्मेश्वरानन्द जी ने टोका। कहा कि आपको समाज के अधिकारियों को अनुकूल भोजन के लिए कहना उचित था। इस पर धर्मवीर जी स्वामी जी को बोले! 'अरे हमें कोई यहां बसना है, जैसा मिल जाये सब चलता है।' धर्मेश्वरानन्द जी ने चावल के साथ आलू-बैंगन खाकर काम चलाया लेकिन वह कहते हैं कि आचार्य धर्मवीर जी के विषय में वह आज तक चिन्तित हैं कि अन्य स्थानों की समाजों में उन्होंने अपने लिए पृथक से स्वास्थ्यानुकूल भोजन की कभी व्यवस्था नहीं कराई। शायद उसी का दुष्परिणाम सामने आया है। धर्मवीर जी ने ऋषि उद्यान में वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम, अतिथिशाला, गुरुकुल, गौशाला, भोजनालय, बड़ा हाल, सरस्वती भवन के नवीनीकरण आदि अनेक कार्य कराए, यज्ञशाला का पुनरुद्धार भी कराया, इन कार्यों पर करोड़ों रुपये हुए। आपमें लोगों से सहायता रूप में दान लेने की प्रभु प्रदत्त प्रतिभा सहित वरदान प्राप्त था जिसे आप सहज भाव से कर लेते थे। आपने यह भी लिखा है कि आचार्य सत्यजित् आर्य जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य विश्वङ्ग जी, आचार्य कर्मवीर जी आदि सर्वात्मा समर्पित होकर भावी पीढ़ी के निर्माण में आचार्य धर्मवीर जी के अनन्य सहयोगी बनकर कार्य करते रहे हैं और उनका यह कार्य आगे जारी रहेगा।

वैदिक गर्जना के सम्पादक श्री नयनकुमार आचार्य ने धर्मवीर जी को अपनी श्रद्धांजलि में कहा है कि ऋषि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा का कायाकल्प करने में अहर्निश अपना जीवन लगाने वाले श्री धर्मवीर जी जैसे व्यक्ति आज कहाँ मिलेंगे? अपनी अपूर्व दूरदर्शिता, अनुपमेय संगठन कौशल्य, अप्रतिम अर्थशुचिता व अनोखी धैर्यशीलता का परिचय देते हुए ऋषि की धरोहर परोपकारिणी सभा को सर्वाधिक गतिमान बनाने में वे सर्वतोमना संलग्न रहे। जब से वे परोपकारिणी सभा से जुड़े कभी विश्राम नहीं पाया। उनका जीवन और यहां तक कि मरना भी, सब कुछ आर्यसमाज के लिए ही सिद्ध हो गया। परोपकारिणी सभा हो या इसकी परोपकारी पत्रिका, ये दोनों डा. धर्मवीर जी के पर्याय बन चुके थे। सभा को आर्थिक दृष्टि से बलवती बनाने व इसके कार्य विस्तार में वे हर क्षण ऐसे जुटे रहे, मानों श्वेतवस्त्रों में घूमते-फिरते सन्यासी ही हों। वह आगे लिखते हैं 'प्रो. डॉ. धर्मवीर जी का जन्म स्वतन्त्रता से एक वर्ष पूर्व 20 अगस्त 1946 को सन्त-सुधारकों की भूमि महाराष्ट्र के लातूर जिलांतर्गत उद्वीर के समीपस्थ नांगलगांव में क्रान्तिकारी आर्य परिवार में हुआ। माता श्रीदेवीजी एवं पिता भीमसेन जी कट्टर वैदिकधर्मी थे। क्रान्तिकारी नेता भाई बन्सीलाल जी आपके नाना जी थे। आरंभिक शिक्षा के बाद धर्मवीर जी को अगली पढ़ाई हेतु गुरुकुल झज्जर भेजा गया। यहां पर ही आपने लेखन के संस्कार हस्तगत किए।'

डा. धर्मवीर जी के 6 अक्टूबर, 2016 को दिवंगत होने पर आचार्य देवव्रत, राज्यपाल, हि.प्र. ने कहा कि यदि हजार व्यक्ति एक तरफ हों तो भी दूसरी तरफ धर्मवीर नामी अकेला शेर काफी था। वह जो लिखते थे उनका सानी नहीं था। मन्त्रों पर बोलने वाला उन जैसा कोई वक्ता नहीं था। व्यंग करने लगे तो लोटपोट कर दें। आर्यसमाज में लम्बे अन्तराल के बाद ऐसा व्यक्ति पैदा हुआ, जिसमें पं. लेखराम व गुरुदत्त के दर्शन होते थे। वो जिस सोच को जनमानस तक पहुंचाना चाहते थे, उसे पूरा करने का हमें संकल्प लेना चाहिये। प्रा. राजेन्द्र जिजासु जी कहते हैं कि डा. धर्मवीर जी परोपकारिणी सभा को जिस ऊंचाई पर ले आये हैं, ये अपने आप में एक असाधारण बात है। आज आर्यसमाज ने एक हीरा खो दिया। श्री गोपाल बाहेती के अनुसार धर्मवीर जी प्रत्येक राष्ट्रीय समस्या पर बड़े बेबाक सम्पादकीय लिखते थे। यह क्षति अपूरणीय है। आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के अनुसार डा. धर्मवीर जी मान-अपमान में सदैव सहज रहे। डा. जगदेव विद्यालंकार जी के अनुसार डा. धर्मवीर जी के जीवन में विलक्षणता थी, आनन्द था। महर्षि दयानन्द ने जिस सत्य के लिए अपना जीवन दिया, डा. धर्मवीर जी उस सत्य के लिये जीवन भर लगे रहे। गृहस्थ होते हुये भी उनका जीवन विरक्त था। उनके जीवन में उनकी धर्मपत्नी का विशेष योगदान रहा। परिवार की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेकर धर्मवीर जी

को समाज-सेवा के लिये मुक्त रखा। स्वामी धर्मानन्द जी का कहना है कि धर्मवीर जी के दृढ़ निश्चय का ही परिणाम है कि ऋषि उद्यान अपने इस वर्तमान स्वरूप में है। आर्य विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री बताते हैं कि जनज्ञान पत्रिका के संस्थापक पं. भारतेन्द्र नाथ जी ने अपनी पत्रिका 'जनज्ञान' में डा. धर्मवीर का एक फोटो छापा था, जिस पर लिखा था "आशा की नई किरण"। ये वाक्य शत-प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। हमने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम जी को नहीं देखा है, पर धर्मवीर जी में हम उनके दर्शन कर सकते हैं। श्री रामनारायण शास्त्री जी ने लिखा है कि जो निर्भोक्ता एक ब्राह्मण में होनी चाहिये, जैसा ब्राह्मण को लिखना चाहिये, बोलना चाहिये, करना चाहिये, इन सब गुणों का उदाहरण थे डा. धर्मवीर जी। हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाये तो हम सच्ची श्रद्धांजलि दे पायेंगे। स्वामी विदेहयोगी के अनुसार डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज की वाटिका के एक माली थे, इस वाटिका को उन्होंने अपना जीवन देकर सींचा है। श्री रासासिंह रावत ने धर्मवीर जी के विषय में कहा कि उन्होंने जिस कार्य को आरम्भ किया, उसे पूरी ऊंचाई पर ले जाकर सम्पन्न किया। दर्शन योग महाविद्यालय के स्वामी ध्रुवदेव जी के अनुसार डा. धर्मवीर जी की वेद और वैदिक सिद्धान्तों में गहरी निष्ठा थी। अपने तप, त्याग, अर्थ-शुचिता आदि गुणों के कारण ही वे पूज्य थे। ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी रविशंकर के अनुसार सभी के अन्दर ये विचार उठ रहे हैं कि डा. धर्मवीर जी की भरपाई कैसे होगी, पर ये कहना उनकी प्रशंसा नहीं, अपमान होगा, क्योंकि इससे हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में असमर्थता जता रहे हैं। हम उनके कार्यों को और गति प्रदान करें, यही उनके लिये सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हमने इस लेख में अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आर्य विद्वानों के लेखों व इतर सामग्री का प्रयोग किया है। हम सभी लेखकों व पत्र-पत्रिकाओं के आभारी हैं। हमने भी अनेक अवसरों पर डा. धर्मवीर जी के दर्शन किए, उनके अनेक प्रवचनों को सुना, उनके द्वारा कराये गये वेद पारायण यज्ञों में सम्मिलित हुए तथा उनके लेखों व विचारों को भी कुछ कुछ जाना है। नवम्बर, 2013 में वह देहरादून आर्यसमाज में उपदेश हेतु पधारे थे। एक दिन हम उन्हें दर्शनों के भाष्यकार आचार्य उदयवीर शास्त्री जी की सुपुत्री श्रीमती आभा सिंह जी के निवास पर ले गये थे। वहां उनके वार्तालाप को सुना था। इसी दिन वह कुछ समय के लिए हमारे निवास पर भी आये और हमारे परिवार को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उनकी याद आती रहती है और हर बार मन में पीड़ा होती है जिसका कारण उनका महान् व्यक्तित्व, उत्तम व श्रेष्ठ कार्यों सहित भविष्य में आर्यसमाज का उनके मार्गदर्शन व कार्यों से वंचित होना है। आगामी 4 से 6 नवम्बर, 2016 को अजमेरे में ऋषि उद्यान में आयोजित ऋषि मेले में भी अपनी श्रद्धांजलि देने हेतु सम्मिलित हो रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्रद्धेय धर्मवीर जी की आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें। इति शम्।

-मनमोहन कुमार आर्य

पता: 196 चुकखूवाला-2

देहरादून-248001

फोन:09412985121